शामली जागरण

ई-पत्रिका

Volume-29

01-11-2018 To
30-11-2018

परिचय

स्थापना / वर्तमान बोर्ड गठनः–

यह निकाय 01 अगस्त 1949 से नगर पालिका **घोषित** की गयी थी। 01 अप्रैल 1954 से चतुर्थ श्रेणी, अक्टूबर 1959 से तृतीय श्रेणी तथा 01 अप्रैल, 1963 से द्वितीय श्रेणी में है। नगर पालिका परिषद **शामली** का क्षेत्रफल 26. 23 वर्ग कि0मी0 है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार नगर की जन. संख्या 1,07,233 है।

वर्तमान में बोर्ड का गठन 19 जुलाई 2012 में हुआ है। श्री अरविन्द संगल अध्यक्ष एवं 25 सदस्य निर्वाचित हुए। **शासन** द्वारा 05 सदस्य नामित हैं तथा श्रेत्रीय विधायक एवं सांसद नगर पालिका के पदेन सदस्य है।

पार्क में महापुरुषों की मूर्तियाँ

शामली जागरण

श्री सुरेंद्र सिंह
(अधिशाषी अधिकारी)

श्रीमती अंजना बंसल
(अध्यक्ष)

नगर पालिका परिषद, शामली *नवम्बर* 2018 के ई-पत्रिका शामली जागरण में स्वागत है | *नवम्बर* माह में हुये विकास कार्यो को ई-पत्रिका शामली जागरण के माध्यम से आपसब तक पहुँचाना चाहते हैं | शामली नगर पालिका प्रत्येक माह ई-पत्रिका शामली जागरण के द्वारा नगर पालिका में हुये विकास कार्यो को आपसब के सामने लाने का प्रयास करता है | जिससे शामली नगर पालिका परिषद के विकास और नई योजनाओं से लाभान्वित हो सके | नगर पालिका परिषद शामली का एक मात्र उद्देश्य नगर पालिका का विकास है | जिसमे बिना किसी भेद-भाव, सभी समुदायों के लोगो को एकसाथ लेकर आगे बढने का उद्देश्य है | जिसके लिए नगर पालिका परिषद के निवासियों को इसमें सहयोग महत्वपूर्ण है | और नगर पालिका इसका उम्मीद करता है | नगरवासियों से अपील है की नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने में नगर पालिका की मदद करे | अपने आस-पास साफ-सुथरा रखे | कूड़ा-कचरा डस्टबिन में रखे,गन्दगी न फैलाये | आने वाले कल अच्छा हो इसके लिये आज बेहतर बनायें |

Mr. Surendra Singh
(Executive Officer)

I am happy to present the November 2018 issue to all of you. A number of projects have been commissioned in the month of November. The former will help smoothen the flow of traffic, reduce the travel time of citizens, ease the congestion and reduce pollution on nagar road. There have been a lot of lessons to learned and these insights will certainly stand in good stead with us in our endeavors in future. The one thing that stands out is the most active participation of citizens. We, the residence of the Nagar Palika Parishad Shamli respective of ages, castes, creeds, religions, localities have untidily participated in creation of Shamli's Swachh Nagar Palika Parishad proposal. As I look into the future with great expectation, it is this one aspect of the municipality which gives me the greatest hope. We in the Nagar Palika Parishad Shamli, would be very happy to receive your feedbacks on all matters that you feel are important.

Nagar Palika Parishad Shamli

I am delighted to present the tasks and issue of Shamli Nagar Palika by E-Patrika Shamli Jagaran in November 2018. Nagar Palika Parishad Shamli is grateful to the citizens who displayed tremendous enthusiasm and whole heartedly participated in numerous activities throughout this period. All of us should bear in mind that this is not end but a beginning of the exercise pertaining to development and Swachh Mission program. The coming years will surely be very hectic and eventful. Shamli promises to leave no room for complacency and will work even harder to achieve the targets. We solicit active participation from the citizens in our endeavor. We sincerely believe that decisions taken by Nagar Palika Parishad Shamli should benefit Nagar Palika Parishad Shamli and the citizens in the ultimate analysis. Many projects process in work in Nagar Palika Parishad Shamli for development our Nagar Palika and citizens. Thanks to all citizens of Nagar Palika Parishad Shamli for supporting to develop Shamli.

दीवाली की हार्दिक शुभकामनायें !

भारत में हिन्दुओं द्वारा मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। दीपों का खास पर्व होने के कारण इसे दीपावली या दिवाली नाम दिया गया। दीपावली का मतलब होता है, दीपों की अवली यानि पंक्ति। इस प्रकार दीपों की पंक्तियों से सुसज्जित इस त्योहार को दीपावली कहा जाता है। इस दिन लक्ष्मी के पूजन का विशेष विधान है। रात्रि के समय प्रत्येक घर में धनधान्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मीजी,विघ्न-विनाशक गणेश जी और विद्या एवं कला की देवी मातेश्वरी सरस्वती देवी की पूजा-आराधना की जाती है। ब्रह्मपुराण के अनुसार कार्तिक अमावस्या की इस अंधेरी रात्रि अर्थात अर्धरात्रि में महालक्ष्मी स्वयं भूलोक में आती हैं और प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में विचरण करती हैं। जो घर हर प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर तरीके से सुसज्जित और प्रकाशयुक्त होता है वहां अंश रूप में ठहर जाती हैं और गंदे स्थानों की तरफ देखती भी नहीं। इसलिए इस दिन घर-बाहर को ख़ूब साफ-सुथरा करके सजाया-संवारा जाता है। कहा जाता है कि दीपावली मनाने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर स्थायी रूप से सदगृहस्थों के घर निवास करती हैं। त्योहारों का जो वातावरण धनतेरस से प्रारम्भ होता है,वह इस दिन पूरे चरम पर आता है। यह पर्व अलग-अलग नाम और विधानों से पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इसका एक कारण यह भी कि इसी दिन अनेक विजयश्री युक्त कार्य हुए हैं। बहुत से शुभ कार्यों का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना गया है। इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था। विक्रम संवत का आरंभ भी इसी दिन से माना जाता है। यानी यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है। इसी दिन व्यापारी अपने बही-खाते बदलते हैं तथा लाभ-हानि का ब्यौरा तैयार करते हैं। हर प्रांत या क्षेत्र में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है। लोगों में दीवाली की बहुत उमंग होती है। लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयों के उपहार एक दूसरे को बांटते हैं,एक दूसरे से मिलते हैं। घर-घर में सुन्दर रंगोली बनाई जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है। बड़े छोटे सभी इस त्योहार में भाग लेते हैं। यह पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक,सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाईचारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।

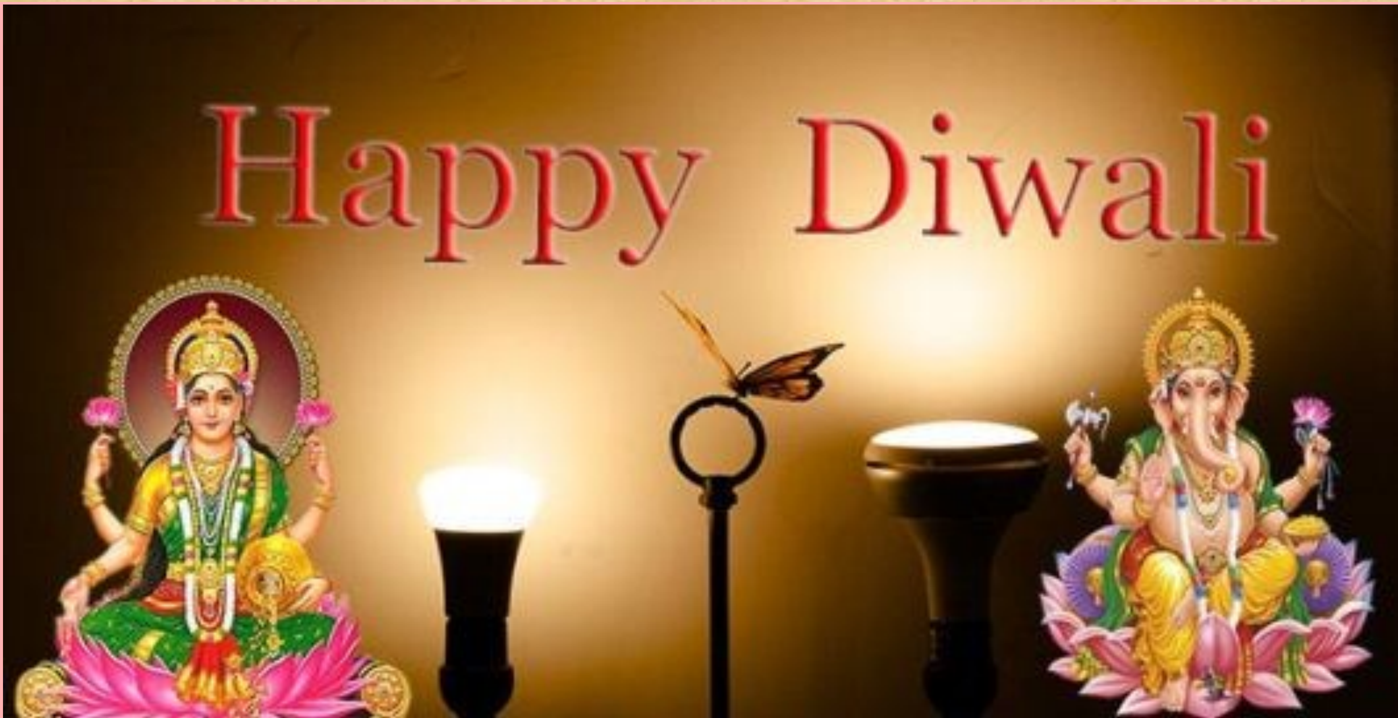

गोवर्धन पूजा

गोवर्धन पूजा को दीवाली के अगले दिन बाद मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा पंजाब, हरियाना, उत्तर प्रदेश और बिहार में काफी प्रसिद्ध है। परंपरा के अनुसार इस दिन खास तौर पर गाय के गोबर से गोवर्धन पहाड़ बनाया जाता है, जिसे गोवर्धन पहाड़ के नाम से जाना जाता है। गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन घरों में गाय के गोबर से गोवर्धननाथ जी की छवि बनाकर उनका पूजन किया जाता है तथा अन्नकूट का भोग लगाया जाता है। यह परंपरा द्वापर युग से चली आ रही है। श्रीमद्भागवत में इस बारे में कई स्थानों पर उल्लेख प्राप्त होते हैं। उसके अनुसार भगवान कृष्ण ने ब्रज में इंद्र की पूजा के स्थान पर कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा आरंभ करवाई थी। इस संबंध में एक लोकप्रिय कथा है। कथानुसार भगवान श्री कृष्ण ने इंद्र का अभिमान चूर करने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठाकर संपूर्ण गोकूल वासियों की इंद्र के कोप से रक्षा की थी। जब इन्द्र का अभिमान चूर हो गया तब उन्होने श्री कृष्ण से क्षमा मांगी। सात दिन बाद श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत नीचे रखा और ब्रजबासियों को प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा और अन्नकूट पर्व मनाने को कहा। तभी से यह पर्व मनाया जाता है।

भाई दूज

भाई दूज का त्योहार भाई बहन के स्नेह को सुदृढ करता है । यह त्योहार दिवाली के दो दिन बाद मनाया जाता है। हिन्दू धर्म में भाई-बहन के स्नेह-प्रतिक त्योहार मनाये जाते है-एक रक्षाबंधन जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है । इसमें भाई बहन रक्षा की प्रतिज्ञा करता है । दूसरा त्योहार ' भाई दूज ' का होता है इसमें बहन भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती है । भाई दूज का त्योहार कार्तिक मास की दुव्तीय को मनाया जाता है ।

भाई दूज व्रत कथा :-

छाया भगवान सूर्यदेव की पत्नी हैं जिनकी दो संतान हुई यमराज तथा यमुना. यमुना अपने भाई यमराज से बहुत स्नेह करती थी. वह उनसे सदा यह निवेदन करती थी वे उनके घर आकर भोजन करें. लेकिन यमराज अपने काम में व्यस्त रहने के कारण यमुना की बात को टाल जाते थे। एक बार कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमुना ने अपने भाई यमराज को भोजन करने के लिए बुलाया तो यमराज मना न कर सके और बहन के घर चल पड़े। रास्ते में यमराज ने नरक में रहनेवाले जीवों को मुक्त कर दिया। भाई को देखते ही यमुना ने बहुत हर्षित हुई और भाई का स्वागत सत्कार किया। यमुना के प्रेम भरा भोजन ग्रहण करने के बाद प्रसन्न होकर यमराज ने बहन से कुछ मांगने को कहा। यमुना ने उनसे मांगा कि- आप प्रतिवर्ष इस दिन मेरे यहां भोजन करने आएंगे और इस दिन जो भाई अपनी बहन से मिलेगा और बहन अपने भाई को टीका करके भोजन कराएगी उसे आपका डर न रहे। यमराज ने यमुना की बात मानते हुए तथास्तु कहा और यमलोक चले गए। तभी से यह यह मान्यता चली आ रही है कि कार्तिक शुक्ल द्वितीय को जो भाई अपनी बहन का आतिथ्य स्वीकार करते हैं उन्हें यमराज का भय नहीं रहता ।

गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ !

श्री गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल,1469 में गाँव तलवंडी, शेइखुपुरा डिस्ट्रिक्ट में हुआ जो की लाहौर पाकिस्तान से 65 KM पश्चिम में स्तिथ है। उनके पिता बाबा कालूचंद्र बेदी और माता त्रिपता नें उनका नाम नानक रखा। उनके पिता गाँव में स्थानीय राजस्व प्रशासन के अधिकारी थे। अपने बाल्य काल में श्री गुरु नानक जी नें कई प्रादेशिक भाषाएँ सिखा जैसे फारसी और अरबी। उनका विवाह वर्ष 1487 में हुआ और उनके दो पुत्र भी हुए एक वर्ष 1491 में और दूसरा 1496 में हुआ। वर्ष 1485 में अपने भैया और भाभी के कहने पर उन्होंने दौलत खान लोधी के स्टोर में अधिकारी के रूप में निकुक्ति ली जो की सुल्तानपुर में मुसलमानों का शासक था। वही पर उनकी मुलाकात एक मुस्लिम कवी के साथ हुई जिसका नाम था मिरासी। वर्ष 1496 में उन्होंने अपना पहला भविष्यवाणी किया - जिसमें उन्होंने कहा कि "कोई भी हिन्दू नहीं और ना ही कोई मुस्लमान है" और कहा कि यह एक महत्वपूर्ण घोषणा है जो ना सिर्फ आदमी के भाईचारा और परमेश्वर के पितृत्व की घोषणा है, बल्कि यह भी स्पष्ट है की मनुष्य की प्राथमिक रूचि किसी भी प्रकार के अध्यात्मिक सिधांत में नहीं है, वह तो मनुष्य और उसके किस्मत में हैं। इसका मतलब है अपने पड़ोसी से अपने जितना प्यार करो। गुरु नानक जी नें अपने मिशन की शुरुवात मरदाना के साथ मिल के किया। अपने इस सन्देश के साथ साथ उन्होंने कमज़ोर लोगों के मदद के लिए ज़ोरदार प्रचार किया उन्होंने अपने सिद्धांतो और नियमों के प्रचार के लिए अपने घर तक को छोड़ दिया और एक सन्यासी के रूप में रहने लगे। उन्होंने हिन्दू और मुस्लमान दोनों धर्मों के विचारों को सम्मिलित करके एक नए धर्म की स्थापना की जो बाद में सिख धर्म के नाम से जाना गया।

भारत में अपने ज्ञान के प्रसार के लिए कई हिन्दू और मुश्लिम धर्म की जगहों का भ्रमण किया।

पुरे भारत में अपने ज्ञान को बाँटने के पश्चात उन्होंने मक्का मदीना की भी यात्रा की और वहां भी लोग उनके विचारों और बातों से अत्यंत प्रभावित हुए। जिस जगह पर गुरु नानक जी नें उन गरीब और संत व्यक्तियों को भोजन खिलाया था वहां सच्चा सौदा नाम का गुरुद्वारा बनाया गया है।

आखिर में अपनी 25 वर्ष की यात्रा के बाद श्री गुरु नानक देव जी करतारपुर, पंजाब के एक गाँव में किसान के रूप में रहने लगे और बाद में उनकी मृत्यु भी वही हुई। भाई गुरुदास जिनका जन्म गुरु नानक के मृत्यु के 12 वर्ष बाद हुआ बचपन से ही सिख मिशन से जुड़ गए। उन्हें सिख गुरुओं का प्रमुख चुना गया। उन्होंने सिख समुदाय जगह-जगह पर बनाया और अपने बैठक के लिए सभा बनाया जिन्हें धरमशाला के नाम से जाना जाता है। आज के दिन में धरमशालाओं में सिख समुदाय गरीब लोगों के लिए खाना देता है।

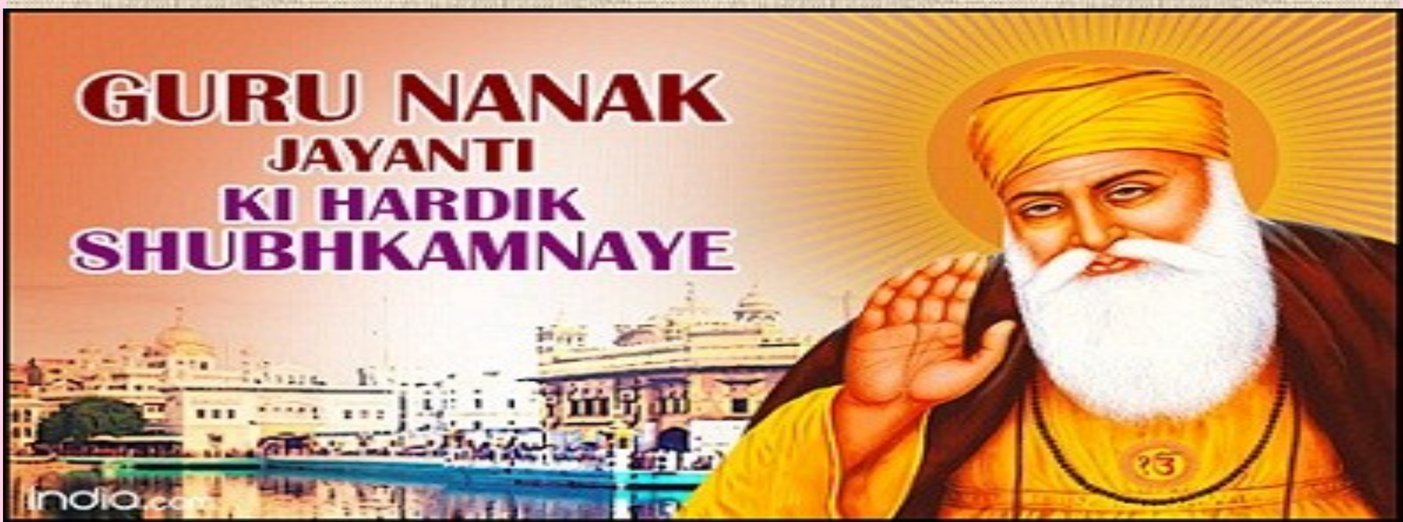

बाल दिवस की हार्दिक बधाई !

पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को इलाहबाद में हुआ था। उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। नेहरू जी का बच्चों से बड़ा स्नेह था और वे बच्चों को देश का भावी निर्माता मानते थे। बच्चों के प्रति उनके इस स्नेह भाव के कारण बच्चे भी उनसे बेहद लगाव और प्रेम रखते थे और उन्हें चाचा नेहरू कहकर पुकारते थे। यही कारण है कि नेहरू जी के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसे नेहरू जयंती कहें या फिर बाल दिवस, यह दिन पूर्णत: बच्चों के लिए समर्पित है। इस दिन विशेष रूप से बच्चों के लिए कार्यक्रम एवं खेल-कूद से जूड़े आयोजन होते हैं। बच्चे देश का भविष्य हैं, वे ऐसे बीज के समान हैं जिन्हें दिया गया पोषण उनके विकास और गुणवत्ता निर्धारित करेगा। यही कारण है कि इस दिन बच्चों से जुड़े विभिन्न मुद्दों जैसे शिक्षा, संस्कार, उनकी सेहत, मानसिक और शारीरिक विकास हेतु जरूरी विषयों पर विचार विमर्श किया जाता है। कई स्कूलों व संस्थानों में बाल मेला एवं प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं, ताकि बच्चों की क्षमता और प्रतिभा को और बढ़ावा मिले। इस दिन विशेष रूप से गरीब बच्चों को मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराने एवं बाल श्रम एवं बाल शोषण जैसे गंभीर मुद्दों पर भी विचार विमर्श किया जाता है। बच्चे नाजुक मन के होते हैं और हर छोटी चीज या बात उनके दिमाग पर असर डालती है। उनका आज, देश के आने वाले कल के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इसलिए उनके क्रियाकलापों, उन्हें दिए जाने वाले ज्ञान और संस्कारों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की मानसिक और शारीरिक सेहत का ख्याल रखना भी बेहद जरूरी है। बच्चों को सही शिक्षा, पोषण, संस्कार मिले यह देशहित के लिए बेहद अहम है, क्योंकि आज के बच्चे ही कल का भविष्य है।

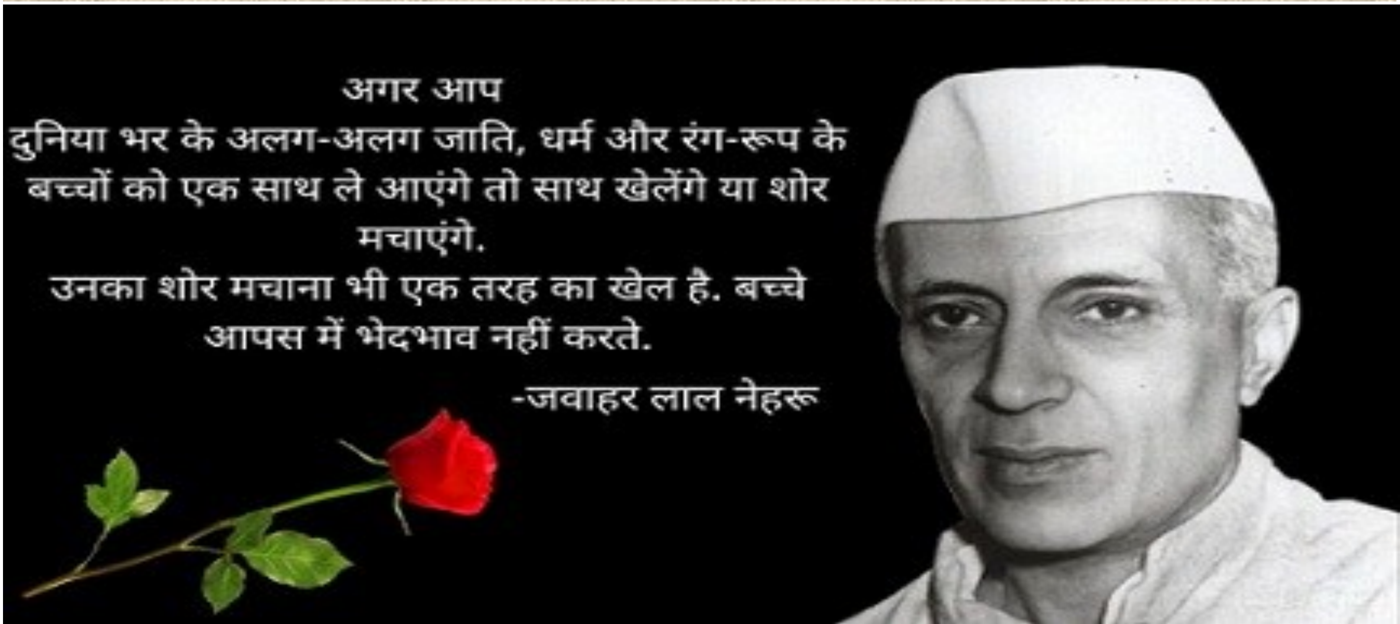

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत खुले मे शौच से मुक्ति के सम्बन्ध में जागरूकता हेतु एक मार्मिक अपील

जागो युवा जागो स्वच्छ भारत है तुम्हारा अधिकार लेकिन पहले उठाओं पहले कर्तव्य का भार

****

जब होगी हर डगर, हर गली साफ |
तो ही पूरी होगी स्वच्छ भारत की आस ||

****

हर गाँव हर शहर होगा जब साफ |
तभी हो पाएगा देश का सही विकास ||

****

स्वच्छ भारत अभियान है एक आस |
ताकि हो भारत देश का सम्पूर्ण विकास ||

****

स्वच्छता ही है एक मात्र उपाए |
जो सभी को हमेशा स्वस्थ्य बनाए ||

****

स्वच्छता है महा अभियान |

स्वछता मे दीजिए अपना योगदान ||

****

हाथ से हाथ मिलाना है
गंदगी नहीं फैलाना है
स्वच्छता को अपनाना है

****

स्वच्छ भारत मिशन शामली

श्री सुरेंद्र सिंह
(अधिशाषी अधिकारी)

श्रीमती अंजना बंसल
(अध्यक्ष)

Contact Us

: www.fageosystems.in

: info@fageosystems.in

Tel/Fax : 01204349756